Sanskrit (Honours)
(B.A. Ist Part)

Date - 13/5/2020
डॉ० लक्ष्मी कान्त मिश्र
अतिथि शिक्षक
विभाग - संस्कृत
आर० डी० एन० कॉलेज, मंझौल,
मुजफ्फरपुर

लघु सिद्धान्तकौमुदि (अच् सन्धिः) -

पूर्व में बताया गया है कि 'एङः पदान्तादति' सूत्र से किस प्रकार 'पूर्वरूप' की क्रिया होती है। अब इसे रूपसिद्धि करते हैं -

हरेऽव - 'हरे + अव' इस स्थिति में 'हरे' के एङ् (ए) से आगे अत् (अ) होने के कारण 'एङः पदान्तादति' सूत्र से 'पूर्वरूप' की क्रिया होने के कारण 'हरेऽव' यह सिद्ध होता है।

विष्णोऽव - 'विष्णो + अव' इस स्थिति 'विष्णो' के एङ् (ओ) से आगे 'अव' के अत् (अ) होने के कारण 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्वरूप होने के कारण 'विष्णोऽव' यह रूप सिद्ध होता है।

यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि 'पूर्वरूप' से तात्पर्य है कि पूर्व के वर्ण के समान आगे के वर्ण का हो जाना। उपरोक्त दोनों उदाहरणों में 'ए' एवं 'ओ' समान ही आगे का वर्ण हो गया है। यहाँ कभी 'अ' की स्थिति थी, इसे समझाने के लिए खड़ाकार 'ऽ' को दर्शाया गया है।

Scanned with CamScanner

(सूत्र) सर्वत्र विभाषा गोः - 'लोके वेदे चैङन्तस्य गोशब्दस्य वा प्रकृतिभावः पदान्ते' अर्थात् 'लोक' एवं 'वेद' में एङन्त ('ए', 'ओ' जिसके अन्त में हो) गोशब्द (गौ शब्द का अवयव 'औकार' का अन्त (ह्रस्व अ) आगे होने पर विकल्प से 'प्रकृतिभाव' होता है।

'लोक' से तात्पर्य लौकिक संस्कृत से है जिसमें इतिहास, पुराण, साहित्य आदि आते हैं तथा 'वेद' से तात्पर्य वैदिक ग्रन्थों से है जिसमें संहिता, ब्राह्मण आदि आते हैं।

'प्रकृतिभाव' से तात्पर्य है प्रयोग का 'मूलभाव' के ही रह जाना। इसमें प्रकृत सन्धिकार्य नहीं होता है।

गो अग्रम् - गोऽग्रम - 'गो + अग्रम' इस स्थिति में एङ् (ओ) से आगे अच् (अ) होने के कारण 'पूर्वरूप' कार्य करने के लिए 'एङः पदान्तादति' सूत्र की प्रवृत्ति होती है। परन्तु 'सर्वत्र विभाषा गोः' सूत्र के कारण 'प्रकृतिभाव' होने से सन्धिकार्य नहीं होता जिससे 'गो अग्रम' यही रूप सिद्ध रहता है। परन्तु 'सर्वत्र विभाषा गोः' सूत्र से ~~पूर्वरूपकार्य~~ प्रकृतिभाव विकल्प से होता है। अतः प्रकृतिभाव के अभाव में 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्वरूप होने पर 'गोऽग्रम' यह सिद्ध होता है।

Rukmini Ramdas
13/5/2020

Scanned with CamScanner